

कुत्रमायस्य तस्य निष्ठास्तवंगुद ॥ ॥ यागिन निद मनिद वि
 यावयाव ननन ॥ ॥ यासुखदयुव ध्वर्थ वक्रमनयाया श्री ययुषयावसासवानदास ध्वम
 यादं सदादं गुचिद्रव ॥ ४७ ॥ सर्वयववसंदृश्य सर्वमास्तवसेसुखं । नगद्वियात्समासन
 लक्ष्मीसुखदृश्यथा ॥ ॥ समस्तदृश्ययासिनांदृश्य मवया आधीन मवयावयासदाद
 र्क समस्तसुखयासिनेसुखध्वय समस्तलार्क धववसासदृश ध्वनगा सुखया मां दृश्ययानं
 लक्ष्मीध्वय गिद्रव ॥ ४८ ॥ सुखस्थानकवंदृश्यं दृश्यस्थानकवंसुख । सुखदृश्यमनयानां

२०७ यागज्योतीति नेवारीभाषा साहित

ASHA ARCHIVES ३३९३

चक्रवर्त्यविवर्तन ॥ ॥ ग्वक्रमनूययांथरुव सखयाअनवसदृशव दृशवयाअनवससख
 वानिव धनगा दृशवव सखव कृष्णात्रयावाकदेवर्थं दुरुदवावश्यव ॥ ४८ ॥ वक्रलिम्ब
 खसैघाटे वन्यानांयणुवृत्तिरिक्कादयनिगुणामव मघेविवदिवाकव ॥ ॥ यवस्यवयादं अ
 दिकमखववथान मूढंवाहथयस गुणधायवमुहुतांशववमद मसव थथिग्वमखवथानसः
 हानियानिसन समक गुण हानयाख क्वायमगव गथ्य समुदाववाव सूर्ययागजमदर्थं धुः
 मखयनिस्यन हानख खलयागख ॥ ४९ ॥ अमममसहसंगन कानयात्यधमागति यथायिगी

३५

उ नाहम् मद्यामद्यावधीयन ॥ ॥ असाधयनि अरुनयनि कृजानियनि थथिदयनिसवः
 नायवाननास मूजातिर्क कृजानिरुव गथ्यधवसा स्रुतिनियालादाति दृदवानसां समस
 लाकनं दृदमधव धवानधकंधायव साव ॥ ५० ॥ अमंलंयक्योयिदा अधमायादिमाधवश
 माग्नेमयतिमिर्वयर्क समायिविसमायन ॥ ॥ असाधयनिसवनायजालदास साधयनिअसाध
 रुव अश्वमजानिरुव गथ्यधवसा खिद्वदहास्यवदाने माथवदलंम दहास्यवहासी माथवद
 मरुवथीरुवसाहन ॥ ५१ ॥ उरुमेसहसंगन कानयागिसमव्रति मूर्ध्निहृदोनिधायक

पुनितेः कसुमेः सह ॥ ॥ उरुमजातिव संगयादं ह यान अक्षमजाति उरुमजवं गः
थयवसा त्वाकमानस नायसंगयादं वादान घावनं गितसधववयं वात धर्था ॥ ५२ ॥
किं कविष्यति सैयकं स्वरावद्वगिकमथ यथासरुलमश्नु ॥ कथायानामुर्गागत ॥ ॥
नायइकवादावच्छय थवसाकाव तालगथाक थवसाकावथं हयीव गथं धावसा अययादः
नवाद्यु हाक नायवादानं पादसवावमहव थगाथं थवसाकाव ॥ ५३ ॥ गकवावसः
मधस्य मधनिम्बयतिष्ठितमधुकीवसमावृष्टि निम्बकिमधुवायत ॥ ॥ गारववन दाविडाव

थयादथुस निम्बायदावगय थयातगवीविय इद कष्टि थनगां सविदिसंगया थथ्यनं
धनिम्ब वाकसवावमहव थथ्या ॥ ५४ ॥ यथकयवयाविद्या यवदुस्युयाधनं । कार्य
कालत्रयं याध नसाविद्यानगद्धनं ॥ ५५ ॥ यथिमथार्थंगयागासु मवयादुससवाध धनः
थनगा संकतववस खलमद्र थगन थविद्याविद्यामख थधनं धनं मखख ॥ ५६ ॥
द्रवस्तुनिवमिशति निस्तुहानववान्धवधकिं यथाजनकरुय मथिगानिष्टुतानिद्र ॥ ॥
गाथिनवाधमिग रुहामद्रुन थनगा थमरावयाववस मद्र थवसंकटस खवमद्र

वनजन ॥ ७४ ॥ अथ श्रुत्वा मया यथा हि द्रवस्तु यथा च वा शकान्तेनालखरुताश्च यः
 कालनायतिष्ठितः ॥ वनस्य वाटस्य स्वान्तापि न वाटं वृष्टं मित्रं कार्यं वल्लभः
 खलमदतदावच्छ्रयया जनश्च दंतययतिमार्थं ॥ ७५ ॥ यद्वा वनहीनस्य कर्महीनस्यः
 थानत्रयानि वृथा वेगनात्तस्य कर्म न ददाति फलं ॥ ७६ ॥ क्लान्तमदृश्या वृद्धिः कर्ममिदृश्या च धनं नाव
 र्थनद्रव्यं गन्धध्वजं न गीताय च न वृद्धाश्च यथैव द्रव्यं ॥ ७७ ॥ क्लान्तमदृश्या वृद्धिः कर्ममिदृश्या च धनं नाव
 रुथा च त्वानि मूलं यानि सुखागमघदम्बवशा ॥ ७८ ॥ यावत्सत्त्वादा सखियया च न भक्ष्यं यत्नः

त्वाद्य सर्थगणकव धयगानिस्तुहव ॥ ७९ ॥ निस्तुलाकयनमवा निस्तुलावनिवाहुवा दावः
 मयूकशीलस्य शक्तिवियस्यनिस्तुला ॥ ॥ कयनयाकयादायवाचुवजनयाक वनिवमयास्व दाः
 यननयूकयादंवाहया शीलसाराव मलिहवाकृतायावद धयगानिस्तुहव ॥ ८० ॥ वलथक्
 लजांयाह्वाविन्यामयिकनकां वयसिनीवनीयस्य वेवायंमहशीकृतश ॥ ॥ हानिक्तसुकृतसः
 जायवयूहवनास मलिहवावसवसांस विवाहायायव माकृत हीनगानिक्तयाक जायवयूहवसां
 यवयूहवसां धयकन्यावविवाहायायव धयं गुरुनी मुखाय स्वकृत्तनिक्तन धवधवजाः

32

कव ग सव ग सुसमा लोकी जय तय क उ यत ॥ ॥ अथ गायत्र्या चर्क वा नरु व सम
 सुगामु अथ यय रुव नाना गामु स अस्या सया क अथ व प्रिय हि द क लेख क म य थ थि
 द क ॥ ७९ ॥ ॥ निग का व न ख ह व न वां यी य द ग न ग अ प्र मा दि स दा य क य नि हा व स उ
 यत ॥ ॥ क का य रु व उ गु वी का य या अ नू य स व न व न सम क भा क व ता क वि व
 क ल थ थि द क य नि हा व स य ॥ ८० ॥ ॥ सम क रु ग गामु ह य नि ग थ जि ग य म धा धि य
 मो र्य गु ला य त स ना धि का वि धी यत ॥ ॥ ह रु क रु आ दि न सम र्थ इ नाना गामु स

वि वा य या क म हा वि व रु व यं व लू य ज य व य रु व धी र्य व न गु नि क ध व स ना य नि
 य ॥ ८१ ॥ ॥ सम क रु य गामु ह वा रु न य य वा जि तः धी र्य मो र्य गु ला य त अ वा धि का वि धी
 यत ॥ ॥ सम क रु ग गु या व रु व नि व गामु स म्भू या स या क थ म वे हा व स व अ व वी व गु वी
 क थ थि द क अ व वा व स य ॥ ८२ ॥ ॥ मू ख नि वा य रु द या ह य व वि हा य व रु क म धी वा य थ
 क वा दी व ज य द ग वि धी यत ॥ ॥ र वा व रु व व न य रु व य व वा व ना या य रु धी र्य
 व न रु कि थ र व रु क थ थि द क इ त रु य ॥ ८३ ॥ ॥ या थि व स रु स य व दा मि गु व रु

पुष्प

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ राजा व पुत्रा व पुत्री लक्ष्मी ॥
 राजसाय स्वप्न उन्नावनन राजायाग धनवृद्धिमानयागं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७४ ॥
 अत्र उव कलिनानां दया कृति संयुक्ता आदिम ध्यावमानं नृ तनया सुनि विक्षिप्य ॥
 निश्चयनं कलवक दया वनकं रुष्टि वीया दान आदिमं मध्या नमं अत्र सं विक्षिप्य ॥
 मया कक्षं धर्मं रुष्टि वियाय ॥ ७५ ॥ यष्टि गय गुणां सर्वं मुखदाया मुक्तं वला गत्माः
 त्मुखं स रुष्टि या हनु कं य स मय ॥ ॥ गुण समं यष्टि गय क दा य समं मुख या क
 धर्मं यानि मिहितं मुखं यनि दाल द्वि गा व गा व रुनि कृष्ण य मा व सा द न ॥ ७६ ॥

७४

या हानि या उ मा नन सनि रा हनु या गुणा यगं सग्न नि वा सय य कल य धना ग म ॥
 हानि य नि स्य न या उ व या कार्य स राजा याग स्वता गुण दयी व कृष्ण व सा य व व कला कः
 य नि स्य न उ स की र्ति व र्णना स्व क्ता व की व कुरु व वृद्धि यायी व य व रु स राजा सग्न वा स
 कयी व ॥ ७७ ॥ मुख नि या धू मा न नु गय दा या म हि य नः अय न ग्वा र्थ नां धू न व क य ग न
 ध्वं ॥ ॥ मुख न न उ ज ल या कार्य स राजा याग स्व ता दा य न द य व कृष्ण व सा य व व
 क य नि स्य न अय की र्ति स्व क्ता व की व लक्ष्मी ना स या व की व य व रु स न व क वा स यायी व
 ॥ ७८ ॥ गत्मा ह्मि ग्वा नि हा धर्म कामा र्थ वृद्ध य गुण व द नि या धू गुण ही न वि स

॥ १० ॥ धनयानिमिलिन राजायनिस्सुन अर्ध अर्ध काम भाक वृद्धियाय यवद्वन
 उलवन्न मन्त्रियायमात्र गुह्यदिन मन्त्र तावत्तं दायमात्रमादं ॥ १० ॥ यः किंचित्कुर्वन्
 त्वं गुरुं वा यदि वा गुरुं । तं तस्मै वदन् राजा । उ द्दत्तेऽ द्दत्ते वयि ॥ ॥ राजायनिस्सुन गुह्यव
 न्न मन्त्रियादानं धनं गुह्यादानं अगुह्यादानं पाययादानं यूयायादानं राजायाग
 धनसंयलि वाप्रययायीव धनं ॥ १० ॥ यथावत्तयविक्रमं तथानुत्तं कुर्वन् । तथ
 पुत्रमथैव कुलगीलनकर्मणा ॥ ॥ गन्धर्वसमा त्वं दायानं दायानं तौ कदवा
 नै यविकायादर्थं पुत्रययनि यविकायाय गन्धर्व कुल गीलन गृही कर्मणं दायमात्र

॥ ११ ॥ ह्यनयं न नरुया वाचवायसना नय । अ यत्कालतममिर्षं रायविविधवकर्मणा ॥
 ॥ ॥ उग्नविनदिनसाय दाययाव सङ्गनदिनसाय आयदास मिहदिनसाय विगलि
 स स्त्री दिनसाय संयलिमदं हानियनिस्सुन यविकायाय यथ ॥ १२ ॥ रुखा
 वद्विषावाजा उरुमाधमधममगनिथायागथायाया विविधवकर्मणा ॥ ॥ राजा
 यनिस्सुन उग्नविनदिनसाय नानायकावनमात्र उरुमजाति उरुमथायसंथाजवयं मध
 नजाति मधमथायसं थाजवयं अर्धमजाति अर्धमथायसं थाजवयं यथ न सव वाचन
 ॥ १३ ॥ नालस्यमुखवैकुण्ठं गह्वरायनिर्नस्य । अर्धमरुमरुकैव त्वरुतुल्य वाधिय

आलागि मूर्ख गमकात्री नखि यसनि रुधि अस्मितापि रुक्मि मरुव थधिंठडमदनय
नि वाजासीतावगमावसदाद ॥ १४ ॥ **एतन्मामिन्नमयुगं अयुगं कयनं लज्जा कयना**
दविणयर्हं तस्माच्च कननासनं ॥ ॥ उद्यमरुवर्धनाजा गावतमाव कदाचित् उद्यमवसाः
कयनिरुवनाम कायया रिठमरिठ मसिन्ननाम धयाकयाकाकार्यनासहयीव धर्मावाजा
गावतमाव ॥ १५ ॥ **वामहायसिनामूर्ख युक्कावाग्विवावक निस्त्रहावभूवर्गेश्वर लज्जा**
सप्रहृत्स्व ॥ ॥ विथरिठवसमनवसु मूर्खकाय कयाश्चामवदक मिसा सन्नहाम
इसर्जन धर्मागातालान मरुत्मायुवयया सुखययीवय ॥ १६ ॥ नकथितस्यवि

मिर्ष नकथितस्यविथीय कालनायवजायक मिश्रविथियुवसुथ ॥ ॥ मिश्रविथिव
कावतास सर्जनदयीवं कावतास मिश्रवसा सर्जनवसा गुरुहयीवं कावतास ॥ १७ ॥
कार्याधिर्लुक्कतलाका नलाकः यत्रमार्थकः तत्र लकीवक्यदसू यविथजनिमातव ॥
कार्यया अन्वयसायाव लोकायाकरुजनाययमाव गथधवसा सावानदुदगाने
मदयाव मामतावगाथ लोकावतावगाकन ॥ १८ ॥ **कटवसनिनानिडा अरुप्रस्यः**
कृतावति कृताः सोरादविधानी इर्जनस्यकृताकमा ॥ ॥ यसनिया ववर्नृकठमइ हृष्टी
मरुवया वगिखमइ दविडया ववर्नृसुखमइ इर्जनयाक कमाखमइसदा ॥ १९ ॥

[illegible]

यथैव विदुषु सदसायिह लादया ॥ वियलिषुमलादायां यविवर्जं द्विवदल ॥ ॥
 गवुलीकायसं थरुव गवक्रनरुदयादं गलावर्गं दलदगसने वियलिषुमलादायां
 पलायाक थथिविवदल गालगं यमावसदादं ॥ ७४ ॥ **रुका रुकं समेयथा** कार्या
 कार्यश्च दुल्यता । सदाकार्यं भूमेयदा रुतवी सर्वदावृधे ॥ ॥ **रुका अरुका** समानसा
 व कार्य अकार्य दुल्यताव सदादं कार्यस सन्ध रुतव सदाकाले थथरुवदास रु
 निजनयनि सन ग्यायथाव्यरुव ॥ ७५ ॥ **रुतवी अरुनीनानी** वाजायदायडा विनी ।

रुतवीरुतिगुनो रुतायवृयकाविनी ॥ ॥ जातमरुदयां भवयाजीवनिनस्यथा
 रुयी वाजावग्यायथाग्य रुतवीरुलीरुयावथाप्या थवक्रतिगुयादावथादक्रवृग्या
 यथाग्य ॥ ७६ ॥ **वाययानोरुयवाग** यशानां गिगिवा रुयी यवृगानी रुयवडा जनूनी
 द्वियदा रुय ॥ ॥ **सिमादवृयारुय रुस** ववृयारुय गिगिवावस यवृगयारुय
 लुयावडा यगुआदिनी अनुयनिस रुय मनुष्य ॥ ७७ ॥ **मातायदिविषं दशा** विना
 विक्रीयतसुती । वाजाकवागिवावाये कामगशरुविष्यति ॥ ॥ **कदाचित्तामामन** रुस

नकिं व ववुन कायमियुव वाजान अवायन कदष्टियायुव दष्टयायुव अदवम ऊव
 कायायुव कसु उतववयीव कसु दवनि ॥ ६८ ॥ यशवाजास्ययीव ममकीस्ययीव
 हित ॥ गशादेकिं कविष्यामि यतावे कागता रुय ॥ ॥ गवुवीदगसैथरुन वाजाथ
 मथ धर्मसु मन्त्रिखु युवाहितंखु थथशवनास कृयाय गवम याकेन वकायायीव
 शवडा क याकेन रुयदगनास उसनान वकायायीव उनकायायधक ॥ ६९ ॥
 विधागालिखिगायस ललाट ६ कवमालिका दिवयिनदिग क्रानि सैलियलिष्यगयन

॥ विधागान कयालसदासंदया अकवमाला दवने थाय कृय लिथानरु
 यिवमखुसाव ॥ ७० ॥ कम्मलोहियुधानेन वृद्धिनायियुथाजन धायाससक गावु
 द्वि रुनदेवारुविष्यामि ॥ ॥ निश्चयने कम्ममूलक्षय वृद्धिन कृवाव वृद्धिन क
 युथाजन गथाधारसा लवका गलयावृद्धि कृयावृद्धि थलादाया कम्मयुधानशव
 तकावलीदवशव ॥ ७१ ॥ कम्मव्ययियुधानानि सदिक्क सुगुरुगुद वगिषुदरु
 लवनेयि जानकीदुशख रुगिनी ॥ ॥ कम्मयुधाय निश्चयनेखव हिदवलाहस

नं पुरुषदृष्टं कार्यया वलिष्ठिंमविस्मन विद्यालग्नस विद्यादायादार्न गीता
या महादृष्टवर्गगीतं ॥ १२ ॥ साधुकलेरुवकस्मिन् दायविपुलसंदर्भः ॥ पुः
। वायिदायनां याति चकीरुगविधागवि ॥ ॥ विद्यागाअनेकलक्ष्मिं किदृष्टयाय
रुद्रसी अनेकगुणायामरुद्रवे विद्यागाअनेकलक्ष्मिं विम्वरुद्रदाव गुणरुद्रस्यवः
सां दाय स्यादवतं ॥ १३ ॥ किं वातिनवद्याह ॥ युद्धमाही ॥ स्वकस्मिंलि ॥ प्रायलि
वदिमूर्खानां वृद्धिः कर्मानुयाविदी ॥ ॥ अनवकमन्यथाव क्यथाजन रु

यीव धवकर्मलक्ष्मिं मवस्यमगक निश्चयनंमूर्खयनिदाकायां वृद्धिरुकाया
वाद्रुत्यनं कर्मयाअनेकानवगीतयीव कर्मलक्ष्मिं ॥ १४ ॥ रुद्रस्यरुद्रलक्ष्मिं दानं सत्यं कंध
स्यरुद्रलक्ष्मिं । अनेकलक्ष्मिं कर्म रुद्रलक्ष्मिं कियथाजन ॥ ॥ लाक्षातया अनेकालतिसाह
वदानयाय कंधयाअनेकाल तिसाहवं सत्यववनकाय । रुद्रयातया अनेकालति
सा नानायवान गुणयाखडनं नानाअनेकानतिथाया क्यथाजन ॥ १५ ॥ ववि
उं रुद्रलक्ष्मिं लीलां रुद्रलक्ष्मिं युष्मरुद्रलक्ष्मिं । सुवृत्तिरुद्रलक्ष्मिं युष्मं यमीनीरुद्रलक्ष्मिं कया ॥ ॥

मिसाभास अलंकारश्च हिद्वद्विद्वद्वय सिमाया अलंकार वादायावधाने मन्त्र
दकाय अलंकारश्च सवृत्तिन चवदावश्य राजाया अलंकार लोकयाक कयादय ॥
॥ १०८ ॥ नदंरुषर्षयन्ता नावीर्गारुषर्षयति ॥ यथिवीरुषर्षयति ॥ नील ॥ सर्वरु
षर्ष ॥ ॥ नगतिया अलंकार चन्द्रमात्वं श्रीयनिस अलंकार पूरुष यथिवीया अः
लंकार राजा समलोकया अलंकार मणील स्वरावश्य ॥ १०९ ॥ मरुतायविः
रुवः प्रष्टं ननीवामानमरुम ॥ कंशाविचरः ॥ कालीयस्य वरुषर्ष ॥ ॥ नवः

तसां ध्वज्याकं लक्ष्मीनवासयायीव ॥ ८२ ॥ यस्य गुरुनिर्णयं गुनीवयविगर्जति
 तस्य गगनानि गीदकं यस्मिन्नीवहिमाणम ॥ ॥ ग्वक्षमनूषया श्री सदाकारं च सदा
 ६ धवयूय खनीव त्वायुर्लक्ष्याक गथा मास्त्रिवा न उदाथं गर्जयं त्वायय
 व धर्षिग्वक्षीश्वनास ध्वज्यायूयया शवीव सुखविचस्यवन गथा पुनदाव यवव
 थं वनं ॥ ८३ ॥ यस्य गुरुमूल्याय वि मागेवहि नकाविही । वदने तस्य गगनानि गुक्ताय
 गथागणि ॥ ॥ ग्वक्षयूयया श्री अग्निसूतदधी सदाकारं मधुववचनन य

४५

यूय आदवयाक गथा मामनरितया कथं दिगार्थयाक धर्षिग्वक्षीश्वनास ध्वज्यायूयया
 शवीव वृद्धिमानयानयाक गथा गुक्तायूयया वन्द्यमार्थं शवीव वाधयश्व ॥ ८४ ॥
 किं जाते वृद्धिः ॥ १ ॥ गीकसंतायकावके शववनकः कलालं वी यणविद्यमककलं ॥ ॥
 तव क्कायमाचादयाव क्ययाजन (गीकसंतायविवश्वनास क्ययाय कलसधव
 वयूश्वना क्कायनं ययूश्व ध्वज्याययाकं समक लक्ष्मीदियथायश्व ॥ ८५ ॥
 नकरायायिययूश्व दंदवदगधनवश कंन्याकावावसा नयि नकयास्यनि विविद्यां ॥ ॥

शुद्धं कायस्वप्न सतिनगुलि ह्यायइसा डिक्क लिक्क फ्फाय थक्कमनूयया व
 वनं विक्कावनायमहु ॥ ८४ ॥ **नृणां वदवधूना** गयामकायदिवज्जन् । यज्जन्तया
 ध्वमध्वन नीलं वा वधमसुज्जन् ॥ ॥ कायमावातवक्कदयं च्छुत्तय च्छुत्तकाय गथ
 नं गयाननीव थक्कन अण्वमेवयह्याककाय ध्वननीलध्वसा दक्कवदवधाय ॥ ८५ ॥
नृकं ननु कवृद्धं दधमाननवक्किना । दध्मंतं नद्वनंसर्वं कृपूणं कलंयथा ॥ ॥
 गहसिमाक्कुमा मननयाव समसुवन्नं भावकव थथं कृपूणकायन कलमावकव

४५

॥ ८६ ॥ **नृकं नायि सवृद्धं** युष्मिन्नं नसुगन्धिना । वासितं नद्वनंसर्वं सयूणं कलं
 यथा ॥ ॥ रिद्ध सुगन्धसिमाक्कुमास खानदस्यं वाहन सुगन्धवासनान समसुव
 नान्कवं नसावकवं थथं सयूणकायन कलंयं (गोलावाचकव) ॥ ८७ ॥
यस्य पूजा वसाहृत्वा लभ्यक्किन्दान् गमिन । विरुद्वधयिसंरुष्ट स्वन्नकस्यमदीकल ॥ ॥
 वक्कयूवधया काययति गूत्रवीत्र महासवक वव स्वातिनी धववसासवद श्री अ
 तिसुन्दरी यवधया वसासवाह धनदकां न संरुष्टस्यं वाह धननगक थक्कया ए

॥ यदासंवादनं स्वर्गसममुत्थयति ॥ १० ॥ ययुषस्तु यिदुवया सयितासु ययुषक
नस्मिन् ययुषविधासं सहाय्ययुनिवृत्ति ॥ ॥ ग्वक्कयुवययाकाययनि वव्यावसासयान
डाक्ककायवकक्षय ग्वक्कववून यासवयंयतियावयात डाक्कववक्षय ग्वक्कमिग्याक
विग्यासयागहन डाक्कमिग्याय ग्वक्कश्री याकन निस्कावहन डाक्कश्रीक्षय ॥ ११ ॥
यस्मिंजीवतिजीवति विग्यामिग्यातिवान्धवाशसरुतंजीवितंनस्य आत्मारथकानजीवति ॥
ग्वक्कयुवय म्वाकक्षय याक्कुतमिग वाधव धक्कम्वाकक्षय मवया आसानवाह

मवन नकं गानकं गियकं वाहक्क म्वाहंवाहायां सरुतंशवक्षय ग्वक्कथहन
थव आत्माजोनिस्काव याहं वकायाहं म्वाहंवाहक्क म्वाहाया म्वाहायानिस्काव
मख ॥ १२ ॥ सजीवतिगुहायस्य यस्यधर्मसजीवति गुहाधर्मविहीनस्य निरुतं
नस्यजीविनं ॥ ॥ ग्वक्कयुवययागुहादक धर्मदत डाक्कयुवयम्वाकक्षय ग्वक्कयुव
ययाक गुहमद धर्ममद डाक्कम्वाहायानिस्काव ॥ १३ ॥ वायासवसगीय
सहाय्ययवतीयती । नस्मीस्यागवतीयस्य सरुतंनस्यजीविनं ॥ ॥ ग्वक्क